REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2019

सांप्रदायिक सद्भावना के कवि धूमिल

आनंदा मारुती कांबळे
सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, आनंदीबाई रावराणे कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
वैभववाडी, जि. सिंधूदूर्ग, महाराष्ट्र, 416810.

गोषवारा:

कोहरा साठ के दशक के उन कवियों के बीच रहा, जिनकी कविताओं को उनकी सामाजिक वास्तविकता और आंतरिक पीड़ा के लिए जाना जाता है। उनका पूरा काव्य लोक कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। स्वतंत्रता के बाद के भारत के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भ उनकी कविताओं में व्यक्त किए गए हैं। उनकी कविताओं में मजदूरों, किसानों, दलितों, महिलाओं के जीवन का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। धूमिल की हर कविता मनुष्य के प्रति मानवीय संवेदना व्यक्त करती है। लोकतंत्र की विफलता, राजनेताओं का स्वार्थ और लालच, शोषण के खिलाफ संघर्ष की प्रेरणा उनकी कविताओं में व्यक्त की गई है। धार्मिक कट्टरता और असंगति इस देश की एक चिरस्थायी समस्या है। प्राचीन काल से ही धर्म के नाम पर कुरीतियों और अधर्म का आचरण किया जाता रहा है। धूमिल का मत था कि धर्म के नाम पर धर्म, अंधविश्वास को बढ़ावा दिया जाता है। नतीजतन, लोगों के बीच नस्लवाद बढ़ता है। धूमिल ने इन तथाकथित धर्मों के सभी नियमों और प्रथाओं का विरोध किया। धूमिल का जिक्र करते हुए उनके मित्र राजशेखर जी ने लिखा है–'हिम्मत के सांचे में कलंकित स्टील डाली गई थी। बचपन का जिद्दी कोहरा, जाति, पंथ, भूत और धार्मिक अंधविश्वास उनकी आँखों के सामने था।

प्रस्तावना:

भारतीय समाज पर धर्म का प्रभाव पड़ा है। धर्म के मोह के कारण मनुष्य तर्कहीन हो गया है। जातिवाद धर्म का सबसे खराब रूप है। धूमिल कहते हैं –

'वे खेतों में भूख और शहरों में
अफवाहों के पुलिन्दे फेंकते हैं
देश और धर्म और नैतिकता की
दुहाई देकर कुछ लोगों की सुविधा
दूसरों की 'हाय' पर सेंकते हैं'

भारतीय समाज में धर्म के नाम पर देश टूट रहा है। इसके दुष्परिणाम हमारे सामने हैं, समाज में अंधविश्वास को बढ़ावा दिया जा रहा है। जातिवाद जहर की तरह फैल रहा है। धर्म के झूठे प्रचार के कारण आधुनिक मनुष्य सही धर्म को नहीं जानता। धूमिल कहते हैं–

भूत–कालीन क्रियाओं से
घिरे हुए लोग
समय की अर्थी उठाये चल रहे हैं।

भारतीय समाज में एक प्राचीन मान्यता है कि लोग वर्तमान को देखे बिना अतीत को देखते हैं। सारा समाज अर्थहीन अमानवीय मर्यादाओं और अर्थहीन परंपराओं के पीछे भाग रहा है। धूमिल ने धर्म के नाम पर चलने वाले बड़े–बड़े मठों, धार्मिक संस्थाओं, मंदिरों और मस्जिदों के अनावश्यक ढाँचों पर व्यंग्य किया है।

'मैंने अचरज से देखा कि दुनिया का
सबसे बड़ा बौध्द मठ
बारूद का सबसे बड़ा गोदाम है
अखबार के मटमैले हाशिये पे
लेटे हुए, एक तटस्थ और कोढी
देवता का
शान्तिवाद, नाम है .....
यह मेरा देश है ....'

बौद्ध मठ धर्म का प्रतीक है, लेकिन आज धर्म के नाम पर धार्मिक स्थलों पर विनाशकारी ताकतें छिपी हैं। हर धर्म मानवता के लिए रोता है, लेकिन धर्म के ठेकेदारों ने धर्म की

बदनामी की है और उसका विकृत रूप समाज के सामने पेश किया है। इस समय धर्म के नाम पर हर जगह अमानवीय व्यवहार हो रहा है। आज तक पूरी दुनिया में धर्म के नाम पर नरसंहार होते रहे हैं। धूमिल का मत था कि धर्म के इन्हीं तथाकथित ठेकेदारों ने किसी भी धर्म का अपमान किया है। धूमिल ने धर्म के इन ठेकेदारों का कड़ा विरोध किया –

'लेकिन मुझे लगा कि विशाल दलदल के किनारे
बहुत बडा अधमरा पशु पड़ा हुआ है
उसकी नाभी में एक सड़ा हुआ घाव है
जिससे लगातार भयानक बदबूदार मवाद
बह रहा है
उसमें जाति और धर्म और सम्प्रदाय के और
पेशा और पूंजी के असंख्य कीडे
बिलबिला रहे हैं।'

कवि एक ऐसे समाज को कहता है जिसमें चेतना नहीं होती है एक मरा हुआ जानवर। इस समाज में जाति, धर्म, पंथ, पेशा, रजिस्टर लटका हुआ है। आज के तथाकथित विकसित समाज में, दुनिया भर में हर दिन कई लोग धर्म के शिकार हो रहे हैं। धर्म के इस अमानवीय रूप का धूमिल ने अपनी कविताओं में पुरजोर विरोध किया –

'धर्म के लिए मरे हुए लोगों के नाम
बात सिर्फ इतनी है
स्नानघाट पर जाता हुआ हर रास्ता
देह की मण्डी से होकर गुजरता है।'

वर्तमान युग में धर्म की वास्तविकता को नकार कर धर्म का विकृत रूप प्रस्तुत किया जा रहा है। सुविधाजनक लोग यह सब अपने स्वार्थ के लिए करते हैं। राजनेताओं और धर्म के ठेकेदारों ने हमेशा दो जातियों के बीच की खाई को पाट दिया है। जातिवाद एक सामाजिक जुनून है जिसकी जड़ें हमारी कट्टरता में हैं जो पूरे पर्यावरण में व्याप्त है। धूमिल ने जातिवाद को जहर के रूप में स्वीकार किया

फन फटकारता हुआ एक दोमुंहा विषधर
रंग रहा है
रोजी के नाम पर
रोटी के नाम पर
जगह जगह जहर
फेंक रहा है।

पूरे समाज में जहर की तरह जातिवाद फैल रहा है। कुछ लोगों ने धर्म को अपनी आजीविका का साधन बना लिया है। धूमिल ने धर्म बेचने वालों पर नाराजगी जताई है। जब तक मनुष्य धर्म के वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचानता, तब तक उसका जातिवाद के वातावरण में रहना तय है।

निष्कर्ष:

यह कहा जा सकता है कि धूमिल ने अपनी कविताओं में विकृत धर्म और जातिवाद का कड़ा विरोध किया है। उन्होंने समाज में प्रचलित मानदंडों और परंपराओं को धर्म और जाति के भेदभाव के लिए एक दिल तोड़ने वाला झटका दिया है। उनकी कविताओं में अपार विश्वास है, वे प्रकाश के पुजारी हैं, उनकी कविताओं में उनका आशावादी स्वर झलकता है। वह अपनी कविताओं में वर्तमान विकृत धार्मिकता को बदलना चाहते हैं। धर्म और जाति की बेड़ियों से मुक्त होकर उन्होंने अपना जीवन जिया। उनके चचेरे भाई कन्हैयाजी उनके बारे में लिखते हैं – वे धर्म के पाखंड में विश्वास नहीं करते थे। उन्हें टॉप और धागा पहनना पसंद नहीं था। वे अस्पृश्यता में विश्वास नहीं करते थे। ईद के दिन मुसलमान घर का बना खाना नहीं खाते थे और घर का बना खाना खाते थे। उन्होंने ईसाई घरों में खाने के लिए भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसके लिए चमार और ब्राह्मण एक ही थे, लेकिन ईमानदार और मेहनती उसके लिए बेईमान और दूसरों की कमाई पर जीने से दस लाख गुना

बेहतर थे। उन्हें मानवतावाद पसंद था, वे एक आम आदमी की तरह दिखते थे।' यह स्पष्ट है कि धूमिल ने समाज में बढ़ती सांप्रदायिकता का कड़ा विरोध कर साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कविता के विषय, जातीय सद्भाव की भावना, राष्ट्रीय एकता के महत्व और इसे व्यक्त करने के लिए ईमानदार शब्दों के कारण, धुमिल सतोत्री हिंदी कविता का महत्वपूर्ण स्थान बना रहा।

सन्दर्भः

1. नाजिम शेख, 'धूमिल के काव्य में सांप्रदायिक सद्भावना एवं राष्ट्रीय एकता', विद्यावार्ता इंटर डिसिप्लिनरी जर्नल, आय.एस.एस.एन. २३१६–६३१८, पृ. १८२–१८४.
2. संसद से सड़क तक–1972
3. कल सुनना मुझे–1976
4. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र– 1984
5. धूमिल समग्र (तीन खण्डों में) – 2021

LBP PUBLICATION